।। ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते ।। संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है।।

मातृभूमि की धर्मध्वजा का अभिनंदन वंदन। राष्ट्र देवता के चरणों में पावन शब्द नमन।।

पाक्षिक
पाथेय कण

कार्तिक शु.१२ युगाब्द ५११९, वि.२०७४

१ नवंबर २०१७

वर्ष ३३ : अंक १४

अपनी बात

परम सुहृद पाठक-गण,

सप्रेम नमस्कार।

पाथेय कण का 'कृषि विशेषांक' आप सभी का प्राप्त हो गया होगा। यह विशेषांक कृषि, पशुपालन, ग्राम विकास और कृषि की विविध जानकारियों को लेकर प्रकाशित किया गया है। हमें विश्वास है कि यह अंक आपको अवश्य पसंद आया होगा।

आपकी प्रतिक्रिया पाथेय कण का संबल है। अतः आप विशेषांक पढ़ने के बाद अवश्य सूचित करें कि आपको यह अंक कैसा लगा।

इसी आशा के साथ।

जय श्रीराम।

आपका

सम्पादक

सहयोग राशि

एक वर्ष	₹ 100/-
पन्द्रह वर्ष	₹ 1000/-

प्रबंधकीय कार्यालय

'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र,
अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर,
जयपुर-302017 (राज.)
सम्पर्क : 9414447123, 9929722111
0141-2529334
Website: www.Patheykan.in
E-mail: patheykan@gmail.com

राष्ट्रवाद के दमन की कुचेष्टा

दीपावली के दो दिन पहले लुधियाना में संघ की एक प्रभात शाखा के मुख्य शिक्षक रवीन्द्र गुसाईं को मोटर साइकिल पर आये दो बदमाशों ने गोली मार दी। फिर दीपोत्सव के दो दिन बाद उ.प्र. के गाजीपुर में करण्डा के संघ के सह खण्ड कार्यवाह राजेश कुमार मिश्र को भी मोटर साइकिल सवारों ने ही गोली मार दी। दोनों ही कार्यकर्ता प्रातः काल की शाखा के बाद लौटे थे और घर तथा दुकान के बाहर बैठे थे। ये घटनायें बताती हैं कि राष्ट्रवादी विचारधारा के विरोधी वैचारिक धरातल पर मात खाने के बाद अब हिंसा पर उतर आये हैं। केरल में तो यह हिंसा और हत्याकाण्ड गत पचास वर्षों से चल रहे हैं, लेकिन अब कर्नाटक, बंगाल, पंजाब, उ.प्रदेश तथा देश के अन्य हिस्सों में भी शुरु हो गये हैं। वाममार्गी, जिहादी और कट्टरपंथी तत्व यह कर रहे हैं। खालिस्तानी अलगाववाद जब पंजाब में चरम पर था उस समय भी वहाँ संघ शाखाओं पर सुनियोजित हमले और हत्याकाण्ड हुए थे।

विचार, तर्क और सत्य की कसौटी पर असफल होने के बाद कट्टरपंथी लोग हिंसा का ही सहारा लेते हैं। ऐसे लोगों को ध्यान रखना चाहिये कि दबाव, धमकी, हत्या, आदि से **'सत्य'** को दबाया नहीं जा सकता। 'हिन्दुत्व' को तो कतई नहीं दबाया जा सकता। हिन्दू-संस्कृति तो भीषण रूप से विपरीत परिस्थितियों में भी अविच्छिन्न और अजेय रही है। प्रत्येक चुनौती के बाद हिन्दुत्व का और प्रखर स्वरूप प्रकट हुआ है। आजादी मिलने के तुरंत बाद मिथ्या आरोप लगा कर पूरे देश और विशेषकर महाराष्ट्र में स्वयंसेवकों के घर जलाये गये तथा योजनाबद्ध रूप से उन पर हमले किये गये। आपात-काल में हजारों कार्यकर्ताओं को जेल में डाला गया, घोर दमन किया गया। फिर भी 'सत्य' की आवाज दबी नहीं। प्रत्येक आघात के बाद, प्रत्येक अग्नि परीक्षा के बाद 'राष्ट्रवाद' और तप कर निकला, अधिक दमकता हुआ प्रकट हुआ।

इसलिये कोई यह समझे कि हिंसा से राष्ट्रवादी विचार को अर्थात् हिन्दुत्व को समाप्त कर सकता है तो वह मुंगेरी लाल की तरह सपने देख रहा हैं। संघ के स्वयंसेवक शांति से संगठन और राष्ट्रोत्थान का काम करते रहेंगे।

लेकिन, आश्चर्य तो तब होता है, जब १९४८ में स्वयंसेवकों के घर जलाने वाले, आपात-काल लगाने वाले, १९८४ में सिख बन्धुओं का संहार करने वाले विचार प्रकट करने की 'आजादी' की बात करते हैं और हिन्दुत्व पर असहिष्णु होने का आरोप लगाते हैं। अर्थात् 'छाज बोले सो बोले, छलनी भी बोले जिसमें बहत्तर छेद हैं!' वास्तव में

जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः।
शीतोष्ण सुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः।।

सर्दी हो या गर्मी, सुख हो या दुख, सम्मान हो या अपमान हो, ऐसी सभी परिस्थितियों में जो एक जैसा शान्त बना रहता है, उसके मन में परमात्मा का वास रहता है। अर्थात् विषम और सम सभी स्थितियों में जो अपने काम में लगा रहता है, वही श्रेष्ठ कार्यकर्ता है।

(श्रीमद्भगवद्गीता-६/७)

तथाकथित लिबरल (उदारवादी), सेकुलरवादी और मानवाधिकारवादी दुनिया के सबसे अधिक असहिष्णु लोग हैं। हिंसा की उक्त प्रकार की घटनाओं को सेकुलर–लिबरल–नक्सल गठजोड़ का पूरा समर्थन रहता है। इसके अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं।

कुछ समय पूर्व बंगलूरु में एक तथाकथित पत्रकार गौरी लंकेश को मोटर साइकिल सवार गुण्डों ने उस समय गोली मार दी जब वे रात्रि को अपने घर में प्रवेश कर रहीं थीं। याद करें कि उक्त राष्ट्र–घाती गठजोड़ ने उस समय कैसा शोर मचाया था। कोई बताये कि लुधियाना और गाजीपुर की दुर्घटनाएं गौरी लंकेश की घटना से किस प्रकार अलग हैं? किन्तु कुछ सेकुलरवादी समाचार पत्रों ने दोनों समाचार प्रकाशित ही नहीं किये। बंगलूरु हत्याकाण्ड के बाद अखबारों के कई–कई पृष्ठ कई दिनों तक इसी घटना को लेकर रंगे रहे। सम्पादकीय, अग्रलेख, टिप्पणियों की बाढ़ आ गई। कई स्थानों पर मोर्चे निकले, मोमबत्तियाँ हाथ में लोगों ने मौन प्रदर्शन किये। गाजीपुर के राजेश भी पत्रकार थे। उनके या रवीन्द्र गुसांई के लिये अब तक कोई **केण्डल–मार्च** प्रायोजित नहीं हुआ है।

– ५ अक्तूबर को सुदर्शन चैनल के दिल्ली कार्यालय के द्वार पर विस्फोटकों की १४ छड़े पाई गईं। इसके विरोध में पत्रकारों का कोई निन्दा प्रस्ताव या असहिष्णुता का आरोप नहीं लगा। समाचार पत्रों और चैनलों ने इसका समाचार तक नहीं दिया।

– दीपावली के पहले दारुल–उलूम ने फतवा दिया कि महिलाओं का शृंगार करना इस्लाम–विरोधी है। नारी–समानता का झण्डा उठाने वाले किसी 'ज्ञानी'(बुद्धिजीवी) या संगठन ने इस फतवे की निन्दा नहीं की। इसके विरोध में कोई न्यायालय में भी नहीं गया।

– जामिया मिलिया विवि (दिल्ली) में छात्राओं पर कई प्रकार के प्रतिबन्ध हैं। काशी हिन्दू विवि (बी एच यू) में तो कोई रोक है ही नहीं फिर भी हल्ला काशी के मामले को लेकर हुआ। जामिया मिलिया के बारे में सब चुप हैं।

– पिछले दिनों वीक, फ्रंटलाइन जैसी कुछ अंग्रेजी पत्रिकाओं में नक्सलियों का महिमा–मण्डन करने वाले लेख छपे। अंग्रेजी दैनिक **हिन्दू** (२६ सित.) तथा **टाइम्स ऑफ इण्डिया** (२७ सित.) में बड़े–बड़े लेख और समाचार प्रकाशित हुए कि माओवादियों का नेता गणपति के स्थान पर बसवराज को बनाया जा रहा है। भारतीय थल सेना के सेनाध्यक्ष बदलने का समाचार भी इतनी प्रमुखता से नहीं छपता। हिंसा में विश्वास रखने वाले देश के दुश्मन नक्सलियों का नेता बदलने का समाचार इतनी प्रमुखता से देने वाले समाचार–पत्र अपने को उदारवादी, लोकतंत्र का रक्षक और वैचारिक आजादी का पहरेदार बताते हैं। इससे बड़ा मजाक और क्या हो सकता है?

वास्तव में ये तथाकथित उदारवादी, मानवतावादी तथा वैचारिक आजादी के रखवाले घोर पाखण्डी और दोगला व्यवहार करने वाले लोग हैं। ❑

पंचांग– मार्गशीर्ष (कृष्ण पक्ष)

युगाब्द–५११९, विक्रमी–२०७४, शाके–१९३९

(५ से १८ नवम्बर २०१७ तक)

अंगारक चतुर्थी (व्रत इसी दिन)–७ नवम्बर, **वैतरणी एकादशी** –१४ नव. (स्मार्त, वैष्णव दोनों का व्रत), **प्रदोष**–१५ नव. , **देवपितृकार्य, शनैश्चरी अमावस्या** – १८ नवम्बर

चन्द्रमा – ५ नवम्बर **मेष** राशि में, ६–७ नव. उच्च की राशि **वृष** में, ८–९ नव. **मिथुन**, १०–११ नव. स्वराशि **कर्क** में, १२–१३ नव. **सिंह**, १४–१५ नव. **कन्या** तथा १६ से १८ नवम्बर तक **तुला** राशि में गोचर करेंगे।

ग्रहों की स्थिति

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष में **शनि** व **गुरु** क्रमशः धनु व तुला राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** तथा **केतु** भी पूर्ववत कर्क व मकर में रहेंगे। **मंगल**, **बुध**, **शुक्र** भी क्रमशः कन्या, वृश्चिक तथा तुला राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य** १६ नवम्बर को दिन में १२–२२ बजे नीच की राशि तुला से वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे।

अपने देश और संस्कृति को हम कितना जानते हैं

यहाँ अपने देश के इतिहास, भूगोल तथा संस्कृति सम्बन्धी दस प्रश्न दिये गये हैं। इनका उत्तर दें और परीक्षा करें कि अपने देश और संस्कृति के बारे में आप कितना जानते हैं?

१. अशोक वाटिका में माता सीता पर तलवार का वार करने से रावण को किसने रोका?

२. किस कौरव महारथी ने महाभारत युद्ध में पहले दस दिनों तक भाग ही नहीं लिया?

३. इटली के किस नगर के चौराहे पर त्रिशूलधारी शिव–शंकर जैसी एक मूर्ति लगी हुई है?

४. देवी के शक्तिपीठों में से एक श्रीलंका में भी है, जहाँ शक्ति का नूपुर गिरा था, नाम बतायें?

५. इस्लामी सत्ता का सफल प्रतिरोध करने वाला असम का कौन सा प्रसिद्ध राजवंश था?

६. एक वर्ष में कितनी ऋतुएं आती हैं?

७. किस खलीफा ने भारतीय चिकित्सकों को बगदाद बुला कर वहाँ एक चिकित्सालय बनवाया?

८. बंकिमचन्द्र के उपन्यास 'आनन्द मठ' का कौन सा गीत व घोष क्रांतिकारियों का मंत्र बन गया?

९. ईरान की राजकुमारी से विवाह करने वाले मेवाड़ के राणा (रावल) कौन थे?

१०. किन जैन मुनि की दीक्षा का स्वर्ण जयंती–वर्ष पिछले दिनों प्रारम्भ हुआ?

(उत्तर इसी अंक में है)

अद्भुत भारत – महान् भारत

लेपाक्षी का वीरभद्र मन्दिर जहाँ जटायु ने प्राण त्यागे थे

जिसका एक स्तम्भ हवा में झूलता है

अपना देश मन्दिरों के लिये भी प्रसिद्ध है। इसीलिये भारत को मन्दिरों का देश भी कहा जाता है। एक से बढ़ कर एक अद्भुत मन्दिर यहाँ बने हुए हैं। ये भारत की महान् संस्कृति का दर्पण तो हैं ही , साथ ही भवन निर्माण कला और निर्माण तकनीक के भी बेजोड़ उदाहरण हैं। ऐसा ही एक मन्दिर आंध्र प्रदेश के अनन्तपुर जिले का विशालकाय वीरभद्र मन्दिर है। लेपाक्षी कस्बे में बने होने के कारण यह लेपाक्षी मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है।

वीरभद्र मन्दिर के अंदर का दृश्य

यह मन्दिर कूर्मसैलम् अर्थात् कछुआ पहाड़ी पर बना हुआ है। लंकापति रावण के वारों से घायल हो पक्षिराज जटायु ने इसी पहाड़ी पर अपने प्राण छोड़े थे। मान्यता यह है कि महर्षि अगस्त्य ने पक्षिराज की स्मृति में ही यह मन्दिर बनवाया था। मन्दिर में स्थित रामलिंगम् शिवलिंग श्रीराम और लक्ष्मण ने जटायु के अंतिम संस्कार के बाद स्थापित किया। लंका जाते समय हनुमान जी ने भी यहाँ शिवलिंग की स्थापना की थी जो हनुमानेलिंगेश्वर नाम से जाना जाता है।

इस ऐतिहासिक मंदिर में प्रवेश से पहले एक विशाल नन्दी की प्रतिमा है जो एक ही चट्टान को काट कर बनाई गई है। २७ फीट लम्बे और १५ फीट ऊँचे शिव जी के वाहन नन्दी की यह प्रतिमा नन्दी की सबसे बड़ी प्रतिमाओं में से एक है। कुछ आगे जाने पर भगवान शेषनाग की एक अद्वितीय मूर्ति है। मुख्य मन्दिर के बाहर एक पैर का निशान बना हुआ है। माना जाता है कि यह माता सीता के पैर का चिन्ह है। इसी के पास गोमुख से लगातार जल का प्रवाह आता है। घायल जटायु की प्यास बुझाने के लिये सीता जी की कृपा से यह जल–स्रोत प्रकट हुआ था।

झूलता स्तम्भ– मुख्य मन्दिर के पास ही स्तम्भों पर टिका एक विशाल नृत्य–मण्डप है। स्तम्भों पर नृत्य करती अप्सराओं

मन्दिर में खड़े स्तम्भों का विहंगम दृश्य

के चित्र खुदे हुए हैं। नृत्य मण्डप तथा मुख्य मन्दिर की दीवारों पर रामायण और महाभारत के प्रसंगों के चित्र बने हुए हैं। नृत्य मण्डप के सत्तर खम्भों में से एक जमीन पर टिका हुआ नहीं है बल्कि अधर में झूल रहा है। भवन–निर्माण विशेषज्ञों का कहना है कि पूरे नृत्य–मण्डप का भार उसी झूलते खम्भे पर टिका है। यह भवन निर्माण कला का एक चमत्कार ही है। यह भी मान्यता है कि इस मन्दिर में भगवान शिव व पार्वती का विवाह हुआ था। उसी अवसर पर अप्सराओं ने नृत्य मण्डप में नृत्य किया था।

इतिहासकारों का मानना है कि आज से चार सौ साल पहले प्रतापी विजयनगर साम्राज्य के दो सेनानियों विरूपन्ना और वीरन्ना ने यह मन्दिर बनवाया था। ❑

मन्दिर परिसर का मुख्य द्वार

नृत्य मण्डप और मन्दिर परिसर का दृश्य

बलिदान दिवस (मार्गशीर्ष शु.५ इस बार –२३ नवम्बर) पर विशेष

राष्ट्र के गौरव - गुरु तेगबहादुर

गुरु नानक की उज्ज्वल परम्परा के छठे गुरु हरगोबिन्द के दूसरे पुत्र त्यागमल (तेगबहादुर) का जन्म वैशाख कृष्ण पंचमी के दिन अमृतसर में हुआ था। वह वर्ष विक्रमी संवत् १६७८ अर्थात् सन् १६२१ का था।

शस्त्र और शास्त्रों का ज्ञान

अनेक प्रकार के आशीर्वचनों की छाया में शिशु त्यागमल का लालन–पालन प्रारम्भ हुआ। उनके व्यक्तित्व के निर्माण में माता नानकी की योग्यता और पिता हरगोबिन्द की निर्भयता, स्वाभिमानी प्रवृत्ति, ओजस्विता, धर्मनिष्ठा तथा बलिदान भावना का विशेष योगदान रहा। चार वर्ष की आयु में त्यागमल की शिक्षा प्रारम्भ हुई। हिन्दी, संस्कृत, अरबी, फारसी भाषा में निपुणता प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने इतिहास, गणित, तर्कशास्त्र, और दर्शन–मीमांसा का ज्ञान भी प्राप्त किया। गीता, महाभारत, उपनिषद् और रामायण के पारायण के साथ–साथ गुरुवाणी को कण्ठस्थ कर समकालीन संतों की रचनायें भी उन्होंने पढ़ डाली।

शास्त्रज्ञान के अतिरिक्त बालक त्यागमल की संगीत के प्रति विशेष रुचि थी। काव्य रचना कर मधुर रागों से नित्य प्रभात बेला में पाठ करना उनका अटूट नियम था। संगीत शास्त्र के साथ उन्होंने घुड़सवारी, धनुर्विद्या, कुश्ती, तलवारबाजी आदि का अभ्यास भी प्रारम्भ किया। इस प्रकार बालक त्यागमल का मन–मस्तिष्क धर्म शास्त्र, अध्यात्म–दर्शन और भारतीय संस्कृति के ज्ञान में धीरे–धीरे पारंगत होने लगा।

त्यागमल से तेगबहादुर

उस समय आम जनता पर विदेशी आततायियों का अत्याचार निंरतर बढ़ रहा था। गुरु हरगोबिन्द का भी मुगलों से टकराव बढ़ता जा रहा था। शाहजहाँ ने उन्हें पराजित करने के लिये कई बार अपने सैन्य–दल अमृतसर भेजे, परन्तु विजय हर बार गुरु जी की ही हुई। विक्रमी १६७२ (सन् १६३५) में करतारपुर के युद्ध में चौदह साल के बालक त्यागमल ने भी भाग लिया और अपने रण–कौशल से सभी को विस्मय–विमुग्ध कर दिया। निडरता से शत्रुओं का सफाया करते देख पिता ने त्यागमल का नाम 'तेगबहादुर' रख दिया।

इन्हीं विषम परिस्थितियों में त्यागमल का विवाह करतारपुर वासी लालचन्द की सुपुत्री गूजरी जी से हुआ। कुछ समय बाद छठे गुरु ने अपने अंतिम समय का आभास पाकर अपने पौत्र हरिराय को गुरु पद के लिये मनोनीत किया। इसी के साथ तेगबहादुर को बकाला (अमृतसर के पास एक गाँव) जाने को कहा। वे माता और पत्नी के साथ अपने ननिहाल बकाला आ गये।

बाबा बकाले

युवा तेगबहादुर बकाला–वास के समय योग साधना करने लगे। उनका सारा समय साधना में व्यतीत होने लगा। यह ब्रह्मचर्य और गृहस्थ आश्रम का अनूठा संगम था। संयम और निष्ठा की इस ज्वाला में तपकर तेगबहादुर का व्यक्तित्व २१ वर्षों में कुन्दन सा दमक उठा था। इसी बीच गुरु हरिराय तथा उनके बाद उनके पुत्र हरिकिशन गुरु गद्दी पर विराजमान हुये। गुरु हरिकिशन जी जब आठ वर्ष के थे तभी चेचक से रोगग्रस्त होने के कारण परलोक सिधार गये। चिरनिद्रा में लीन होने से पूर्व उन्होंने गुरु संस्था की परम्परा के अनुसार उत्तराधिकारी के मनोनयन के प्रतीक के रूप में एक नारियल तथा पाँच पैसे हाथ में लेकर 'बाबा बकाले' शब्द उच्चारित किये, जिसका अभिप्राय था कि भावी गुरु बकाला में विराजमान हैं। अतः समाज के महानुभावों ने एक मत से नवम् गुरु के रूप में तेगबहादुर के नाम की घोषणा कर दी।

गुरु तेगबहादुर ने सभी श्रद्धालुओं की भावना को ध्यान में रखते हुए बकाला छोड़ कर पास ही विलासपुर के पास अपनी माता के नाम से 'नानकी चक' में एक नया केन्द्र स्थापित किया। यह 'नानकीचक' बाद में 'आनन्दपुर साहिब' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। गुरु तेगबहादुर में आदिगुरु नानकदेव जैसी निरंकारी मस्ती, गुरु अर्जुनदेव जैसी सहनशीलता और उत्साह तथा छठे गुरु हरगोबिन्द जैसी तेजस्विता थी। गुरु गद्दी पर विराजते ही सबसे पहले उन्होंने गुरु ग्रन्थ साहिब में कुछ उपदेश और जोड़कर विस्तृत रूप प्रदान किया।

आप से बढ़कर कौन

उसी कालखण्ड में मुगल शासक औरंगजेब के निरंतर बढ़ते अत्याचारों के अंतर्गत हिन्दुओं पर जजिया कर लगा दिया गया। हिन्दू उत्सवों पर पाबन्दी लगा दी गई तथा प्रसिद्ध धर्मस्थलों को नष्ट कर दिया गया। ऐसे में गुरु दरबार में कश्मीरी पंडितों ने सुरक्षा की गुहार की। हिन्दू समाज की रक्षा और आये संकट को सुनकर वे चिंता में डूब गये। उस समय उनके निकट उनका ९वर्षीय पुत्र गोबिन्दराय भी बैठा था। उन्होंने जिज्ञासा प्रकट करते हुए कहा– *''पिताजी! क्या इनकी रक्षा का कोई उपाय नहीं है?''*

नवम् गुरु ने कहा– *''उपाय क्यों नहीं है वत्स! इस समय धर्म*

और देश की रक्षा का एक मात्र उपाय किसी महापुरुष का बलिदान है।''

राष्ट्रीय चेतना के संस्कारों से अभिभूत बालक गोबिन्दराय सहज भाव से बोल उठे–*'' पिताजी इस पवित्र और महान् कार्य के लिये आपसे बढ़कर और कौन महापुरुष है और इन बेसहारा लोगों की रक्षा से बढ़कर और क्या परोपकार हो सकता है?''*

बालक के ये शब्द सुनते ही दरबार में सन्नाटा छा गया। बालक का राष्ट्र भाव देखकर नवम् गुरु का चेहरा अपूर्व तेज से दीप्तिमान हो गया। उन्होंने पण्डितों को सम्बोधित करते हुए कहा कि– ''आप लोग चिन्ता न करें। औरंगजेब तक यह संदेश पहुँचा दें कि यदि तेगबहादुर को धर्म परिवर्तन के लिए तैयार कर लिया तो सारा हिन्दू समाज मुसलमान बन जायेगा। गुरुजी का यह संदेश दिल्ली दरबार तक भिजवाया गया। वहीं से उसने नवम् गुरु को बन्दी बनाकर उसके सामने उपस्थित करने का आदेश दिया।

अभूतपूर्व बलिदान

इसी बीच नवम् गुरु ने ८ जुलाई १६७५को बालक गोबिन्द राय को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर भाई मतिदास, भाई सतीदास, भाई दयालदास तथा अन्य शिष्यों के साथ दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। रास्ते में गुरुजी एवं उनके साथियों को गिरफ्तार कर उन्हें दिल्ली दरबार में औरंगजेब के सामने प्रस्तुत किया गया।

औरंगजेब ने नवम् गुरु को इस्लाम स्वीकार करने के लिये कहा, तो उन्होंने शान्त भाव से मना कर दिया। यह सुनकर औरंगजेब झल्लाया और उसने भीषण यातनायें देना प्रारम्भ किया। उन्हें भूखा, प्यासा रखा गया लेकिन गुरुजी और उनके शिष्य यह सब शान्त भाव से सहते रहे।

११ नवम्बर १६७५ को औरंगजेब ने दिल्ली की कोतवाली के समीप भाई मतीदास को सरेआम आरे से चिरवाया। भाई दयालदास को खौलते हुए पानी के कढ़ाव में डाला गया। भाई सतीदास को रूई में लपेट कर जीवित ही जला डाला। इतना सब होने पर भी मुगल गुरु तेगबहादुर को अपने धर्म व राष्ट्र रक्षा के संकल्प से डिगा नहीं सके।

आखिर में जब औरंगजेब की एक न चली, तब उसने गुरुजी के वध का आदेश दिया। उसके बाद कोतवाली के सामने वहाँ जुटी भीड़ के समक्ष जल्लादों ने गुरुजी का शीश उतार लिया। दिल्ली के चादंनी चौक स्थित 'गुरुद्वारा शीशगंज' उस बलिदान स्मारक के रूप में आज भी विद्यमान है।

निस्संदेह नवम् गुरु का यह बलिदान अभूतपूर्व था। इस बलिदान ने राष्ट्रीय चेतना के पुनर्जागरण का एक नया मंत्र फूंका। राष्ट्र साधना में महान तपस्वी गुरु तेगबहादुर के बलिदान ने समाज जीवन में नवीन प्राण फूंक कर समाज को एक नई प्रेरणा दी। ❑

उत्तर देश व संस्कृति को जानें – महारानी मन्दोदरी, कर्ण, बोलोग्ना, लंका(देवी सीताम्बा), अहोम, छह, हारुन–उल–रशीद, वन्देमातरम्, बाप्पा रावल, मुनि विद्यासागर जी महाराज

धरती रो रंग बदल ज्यासी

थे रिश्वत देणीं बंद करो, लेवणियां भूखां मर ज्यासी।
थे घास नांखणीं बंद करो, सरकारी सांड सुधर ज्यासी।।

खुद रा घर को करो सुधार, आखो गांव सुधर ज्यासी।
थे भाव देवणां बंद करो, कैयां रा भाव उतर ज्यासी।।

दूजां में गलत्यां मत देखो, गलत्यां खुद में ही मिल ज्यासी।
जे खुद चोखा बण रेवोला, पाड़ोसी चोखा मिल ज्यासी।।

थे ब्लेक लेवणों बंद करो, दो नंबर पूंजी घट ज्यासी।
ईमान धरम पर चालोला, तो पाप आप रो कट ज्यासी।।

बेटी री कदर करोला तो, झांसी की राण्यां आ ज्यासी।
पन्ना मीरां अर पदमणियां, सीतां सावित्र्यां आ ज्यासी।।

आजादी रो मतलब समझ्यां, भारत रो रुप संवर ज्यासी।
सूतोडा शेर जाग ज्यासी, स्याल्यां में भगदड़ मच ज्यासी।।

भिड़ ज्यावो आतंकवाद्यां सूं, आतंकवादी खुद डर ज्यासी।
सीमाड़े सूता मत रेवो, दुशमण री छाती फट ज्यासी।।

जे एक होयकर रेवोला, तो झोड झमेला मिट ज्यासी।
मेहनत की रोटी खावोला, तो बेईमानी मिट ज्यासी।।

झूठा वादां में मती फसो, वादां री हवा निकल ज्यासी।
वोटां री ताकत नें समझ्यां, दादां री जमीं खिसक ज्यासी।।

नारां रे लारे मत भागो, नारां रे नाथां घल ज्यासी।
मत बंद और हड़ताल करो, नुकसांण देश रो बच ज्यासी।।

जे नेम धरम पर चालोला, जीणें रो ढंग बदल ज्यासी।
मैंणत रा मोती बोयां सुं, धरती रो रंग बदल ज्यासी।।

कविता री कदर करोला तो, गीतां री राग बदल ज्यासी।
दोस्तों आलस छोड़ उठो, भारत रा भाग बदल ज्यासी।।

विज्ञापन

सब समाज को लिये साथ में आगे है बढ़ते जाना

दृष्टिबाधित छात्रों की अद्‌भुत कबड्‌डी

अगस्त से अक्तूबर तक देश में कबड्‌डी की धूम रही। प्रो कबड्‌डी लीग ने सफलता और लोकप्रियता की नई ऊँचाइयों को स्पर्श किया। इस चकाचौंध करने वाली कबड्‌डी के बीच एक प्रतियोगिता साँभर नगर में भी हुई। यह विशेष कबड्‌डी थी, क्योंकि इसमें भाग लेने वाले किशोर और युवा ऐसे थे जिन्हें या तो बिल्कुल दिखाई नहीं देता या बहुत ही कम दिखाई देता है। ऐसे दृष्टिबाधित छात्रों की राज्यस्तरीय प्रतियोगिता गत ७,८ तथा ९ अक्तूबर को सांभर के संस्कृत विद्यालय में आयोजित की गई।

यह प्रतियोगिता भी किसी रोमांचकारी अनुभव से कम नहीं थी। आयोजकों के पास साधन भी कम थे और अर्थाभाव भी था किन्तु उनके और खिलाड़ियों के उत्साह में कोई कमी नहीं थी। कबड्‌डी का खेल बालू मिट्‌टी में हुआ तथा चूने के स्थान पर मिट्‌टी को त्रिभुजाकार में ऊँचा उठा कर मध्यरेखा बनाई गई। मैदान की सीमा रेखाएं भी इसी प्रकार बनाई गई थी ताकि खिलाड़ी छू कर अनुमान लगा सके। कोई टच लाइन या बोनस लाइन भी नहीं। खिलाड़ी केवल अनुमान के सहारे मध्य रेखा तक आते थे और विपक्षी क्षेत्र में 'रेड' करते थे। मामूली दृष्टि वाले खिलाड़ी भी दृष्टिहीन खिलाड़ियों की सहायता करते थे।

अपने समाज के ऐसे दिव्यांग बन्धुओं के सहयोग के लिये संघ के स्वयंसेवकों ने कुछ वर्षों पहले सक्षम नाम से एक काम शुरु किया है। इससे जुड़े कार्यकर्ता पूरे देश में दृष्टिबाधित एवं अन्य दिव्यांग बन्धुओं की सेवा का कार्य कर रहे हैं।

दृष्टि के लगभग अभाव के बाद भी अपने पाले में आये विपक्षी खिलाड़ी पर सारे रक्षक एक साथ ताल-मेल के साथ हमला करते थे। रेड करने वाला भी केवल अनुमान के सहारे कभी साफ बच निकलता और कभी पकड़ में आ जाता। दृष्टिबाधित खिलाड़ी इस प्रकार संदेश दे रहे थे कि भले ही प्रकृति ने उन्हें 'दृष्टि' से वंचित कर दिया हो, पर जीवट और जिजीविषा की कमी उनमें नहीं है।

जोधपुर, कोटा, भीलवाड़ा और श्रीगंगानगर के दृष्टिबाधित विद्यालयों के सीनियर और जूनियर वर्ग के छात्रों की यह प्रतियोगिता थी। सीनियर वर्ग में अंध विद्यालय श्रीगंगानगर ने प्रज्ञा निकेतन जोधपुर को ३५-१९ से हरा कर प्रतियोगिता जीती। कनिष्ठ वर्ग में अंतिम मुकाबला जोधपुर के दो संस्थानों के बीच था। इसमें नेत्रहीन विकास संस्थान ने राजकीय अंध विद्यालय आंगणवा को २८-१८ से हराया। जीतने वाले दृष्टिबाधित छात्रों का उत्साह और उमंग देखते ही बनते थे। नियति ने उनके साथ जो अन्याय किया उसका आभास कहीं से नहीं हो रहा था। उनके बीच में किसी अन्य के पहुँचते ही उन्हें आभास हो जाता था कि कोई नया व्यक्ति उनके बीच में आ गया है।

हमारे ऐसे दिव्यांग बन्धुओं को बराबरी पर लाना पूरे समाज का दायित्व है। खेल संगठनों और सरकार से भी ऐसे आयोजनों में पूरा सहयोग अपेक्षित हैं। अभी तो सांभर के नाथ-आश्रम के सहयोग से यह प्रतियोगिता हो रही है।

एक अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी का हाल

उक्त राज्य-स्तरीय प्रतियोगिता की आयोजन भी समिति के प्रमुख भी एक दृष्टिबाधित खिलाड़ी हैं। जिनका नाम राजेन्द्र वर्मा है। श्री राजेन्द्र वर्मा आमेर तहसील के लखेर गाँव के हैं। ६ फरवरी १९७६ को जन्मे वर्मा अपने जमाने में क्रिकेट के अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी थे। दृष्टिबाधित खिलाड़ियों का पहला विश्व-कप १९९८ में भारत में हुआ था। राजेन्द्र वर्मा इस विश्व-कप में भारत की ओर से खेले। २००२ के विश्व-कप में भी वे खेले। भारत-पाकिस्तान, भारत-इंग्लैण्ड आदि की श्रृंखलाओं में इस धुंरधर बल्लेबाज ने कई शतक और दोहरे शतक लगा कर भारत को जीत दिलाई।

ऐसा जीवट वाला खिलाड़ी सांभर के राजकीय प्राथमिक विद्यालय में तृतीय श्रेणी का अध्यापक है। यह नौकरी भी राजनीति विज्ञान में एम.ए. तथा बी.एड. करने पर मिली। क्रिकेट में यदि पैसा बरसता है तो कुछ गिने-चुने खिलाड़ी ही इसे बटोर लेते हैं।

अपने समाज के ऐसे दिव्यांग बन्धुओं के सहयोग के लिये संघ के स्वयंसेवकों ने कुछ वर्षों पहले 'सक्षम' नाम से एक काम शुरु किया है। इससे जुड़े कार्यकर्ता पूरे देश में दृष्टिबाधित एवं अन्य दिव्यांग बन्धुओं की सेवा का कार्य कर रहे हैं। ❑

सरसंघचालक भागवत जी का विजयादशमी उद्‌बोधन

राष्ट्रीय अखण्डता के आधार पर कानून में बदलाव करने होंगे

समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुँचे

विजयादशमी के पावन पर्व पर नागपुर में आयोजित उत्सव में भागवत जी ने कहा कि राष्ट्र की अखण्डता प्राथमिक है। इसे ध्यान में रखते हुए कानूनी प्रावधानों में इस प्रकार का बदलाव करना होगा कि जम्मू–कश्मीर में पाकिस्तान से आये विस्थापितों को नागरिकता मिल सके। उन्होंने कहा कि पुराने प्रावधानों को बदल कर ऐसी स्थिति बनानी होगी जिससे कश्मीरवासी भारत से एकात्मता का अनुभव कर सकें। विजयदशमी पर होने वाला सरसंघचालक जी का उद्‌बोधन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है तथा सम्पूर्ण राष्ट्र की दिशा तय करने वाला होता है। इस सम्बोधन में भागवत जी ने सेना और अन्य सशस्त्र बलों के प्रयासों, विशेष कर जम्मू–कश्मीर में आतंकियों पर नियंत्रण पाने में सफलता की सराहना की तथा सीमावर्ती बंगाल व केरल राज्यों की स्थिति पर चिंता प्रकट की।

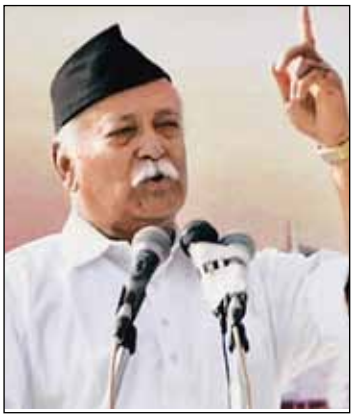

आर्थिक स्थिति की चर्चा करते हुए उन्होंने सुझाव दिया कि योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाना चाहिये। इसी के साथ स्वरोजगारी, खुदरा व्यापारी एवं लघु व मध्यम उद्योगों का विशेष ध्यान रखना होगा। किसानों की स्थिति ठीक करने के लिये न्यूनतम समर्थन मूल्य सुनिश्चित करना होगा तथा यह उत्पादन की लागत के हिसाब से तय करना होगा। गौ आधारित खेती को भी बढ़ावा देना होगा। इसी संदर्भ में उन्होंने जोर दिया कि हिंसा की घटनाओं को व्यर्थ ही गो–रक्षकों से जोड़ा जाता है। गोरक्षकों को दुष्प्रचार की चिन्ता किये बिना शासन, प्रशासन व समाज को साथ ले अपना दायित्व निभाना चाहिये। गोरक्षा विज्ञान सम्मत है तथा सारे समाज की आस्था का विषय है। सरसंघचालक भागवत जी ने स्पष्ट रुप से कहा कि म्यांमार से भगाये गये रोहिंग्या अवैध घुसपैठिये हैं। ये न केवल देश की अर्थ–व्यवस्था पर भार हैं, बल्कि हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये भी चुनौती हैं क्योंकि आतंकी गतिविधियों में लिप्त होने के कारण ही इन्हें म्यांमार से खदेड़ा गया। उन्होंने संस्कारक्षम शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि बालकों को संस्कारित करना परिवार का भी दायित्व है।

कुशोक बकुला का स्मरण

अपने सम्बोधन के प्रारम्भ में भागवत जी ने पूज्य लामा कुशोक बकुला रिनपोछे का स्मरण किया। उनका यह जन्म–शताब्दी वर्ष है तथा उन्हें तथागत गौतम बुद्ध के सोलह प्रमुख अनुयायियों में से एक 'बकुल' का अवतार माना जाता है। लामा कुशोक बकुला लोक सभा के सदस्य तथा जम्मू–कश्मीर सरकार में मंत्री भी रहे। इसी के साथ भागवत जी ने स्मरण कराया कि स्वामी विवेकानन्द के प्रसिद्ध

भागवत जी ने कहा

– राष्ट्र एक लम्बी प्रक्रिया के बाद एक विशिष्ट संस्कृति के विकसित होने के बाद बनते हैं। भारत सत्ता आधारित 'राष्ट्र–राज्य' की अवधारणा से अलग ऐसा ही राष्ट्र है।

– हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान के जाग्रत होने के चिन्ह 'डोकलाम' जैसी घटनाओं में दिखाई देने लगे हैं।

– विभाजन के समय पाकिस्तान से जम्मू–कश्मीर में आये विस्थापितों को नागरिकता देनी होगी।

– सीमा पर रहने वाले बन्धुओं की सुरक्षा व आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था समाज के सहयोग से करनी होगी।

– बंगाल व केरल का शासन राष्ट्रविरोधियों की सहायता करता दिखता है। सज्जन शक्ति जाग्रत हो प्रतिकार करे।

– रोहिंग्या देश की सुरक्षा एवं एकात्मता के लिये संकट हैं।

– शासन ने लोक कल्याणकारी एवं साहसिक निर्णय लिये लेकिन खेतिहर मजदूरों, अपना काम–धन्धा करने वालों से लेकर बड़े उद्योगों तक के लिये समन्वित नीति की आवश्यकता है।

–अर्थ व्यवस्था के दोषपूर्ण वैश्विक प्रतिमानों को त्यागकर स्थानीय परिस्थिति के अनुरूप नये प्रतिमान बनाने की जरूरत है।

– किसानों की हालत सुधारना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। सरकारी योजनाओं का लाभ मिलना सुनिश्चित हो। किसान को उत्पादन की लागत के हिसाब से न्यूनतम समर्थन मूल्य मिले।

– गोरक्षा तथा गोसंवर्द्धन देश की आस्था से जुड़ा है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी गो–उत्पाद स्वास्थ्य–वर्द्धन व स्वास्थ्य रक्षा के लिये सर्वाधिक उपयुक्त। दुष्प्रचार से विचलित हुए बिना अपना कर्तव्य पालन करना है।

– जल–संरक्षण व जल–प्रबंधन की दिशा में जो अनेक प्रयत्न चल रहे हैं वे सुपरिणामकारी होंगे व पर्यावरण व कृषि समृद्ध होगी।

– समाज को संस्कारित व दायित्व बोध युक्त बनाने के लिये शिक्षा नीति में परिवर्तन अपेक्षित है। इसी के साथ कुटुम्ब एवं समाज प्रबोधन के माध्यम से भी सद्‌संस्कार जाग्रत करने होंगे।

शिकागो धर्मसभा के भाषण का यह १२५ वाँ वर्ष है। उनकी शिष्या भगिनि निवेदिता जो आयरलैण्ड की थीं के जन्म का भी सार्द्धशताब्दी (१५०वर्ष) पूरा देश मना रहा है। इन सभी महानुभावों ने हिन्दू समाज और राष्ट्र के जागरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वधर्म एवं स्वदेश के गौरव का भाव जगा कर देशवासियों को संगठित पुरुषार्थ करने की प्रेरणा सभी ने दी।

उन्होंने कहा कि समाज को राष्ट्र गौरव से परिपूर्ण पुरूषार्थ के लिये खड़ा करना है तो गुलामी के कालखण्ड में घर कर गये विदेशी दृष्टि व संस्कारों से चिन्तकों, बुद्धिजीवियों को मुक्त होना होगा। उक्त दृष्टि एवं विचारों ने हमें स्वाभिमान–शून्य, आत्महीन कर हमारे चित्त को भ्रमित व मलिन कर दिया है। विविधताओं को एकता के सूत्र में पिरोने वाली हमारी संस्कृति का साक्षात्कार करने से ही राष्ट्र का वास्तविक विकास होगा तथा विश्व में हमारी पहचान बनेगी एवं हमें मान्यता मिलेगी।

सज्जन शक्ति जगे

जम्मू–कश्मीर के सम्बन्ध में आवश्यक संवैधानिक प्रावधान करने की आवश्यकता पर बल देते हुए भागवत जी ने कहा कि वहाँ रह रहे विस्थापितों को नागरिकता देना अपेक्षित है। ये विस्थापित १९४७ में भारत विभाजन के समय नये बने पाकिस्तान से भारत आये थे और जम्मू–कश्मीर में बस गये थे। इसी संदर्भ में उन्होंने कहा कि रोहिंग्या मुसलमान हिंसक प्रवृत्ति एवं अलगाववादी उपद्रवों में लिप्त होने के कारण म्यांमार से खदेड़े गये। भारत में काफी संख्या में रोंहिग्या घुस आये हैं और बड़ी संख्या में घुसने को तैयार हैं। वे देश की सुरक्षा व एकात्मता के लिये संकट हैं। सरकार भी यही सोचती है किन्तु समाज का जागरूक रहना भी संकट के समाधान के लिये जरूरी है । समाज की सज्जन शक्ति को संगठित व जाग्रत हो कर ऐसे संकटों के समय आगे आना होगा। बंगाल व केरल में जिहादियों के उपद्रव एवं उनको मिल रहे राजनैतिक संरक्षण के प्रतिकार के लिये भी यह आवश्यक है।

भागवत जी ने विभिन्न सरकारी योजनाओं की सराहना करते हुए स्मरण कराया कि सभी के समन्वित विकास के लिये नीतियाँ बनाई जानी चाहिये। खेतिहर मजदूर, किसान, खुदरा व्यापारी, मध्यम एवं लघु उद्योग आदि का उत्थान ध्यान में रखा जाना चाहिये। प्रत्येक देश के विकास के आर्थिक प्रतिमान (जी डी पी) अलग होते हैं तथा देश की परिस्थिति के अनुसार ही तय होने चाहिये। अतः घिसे–पिटे व दोषपूर्ण प्रतिमानों के आधार पर देश की आर्थिक नीतियाँ नहीं बनाई जा सकतीं। 'स्वदेशी' पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि समाज को आग्रहपूर्वक स्वदेश निर्मित वस्तुओं का प्रयोग करना चहिये।

अंत में बाबा साहब अम्बेडकर एवं भगिनि निवेदिता को उद्घृत करते हुए उन्होंने समाज का आह्वान किया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के समाज को संगठित व समरस करने के अभियान में सहभागी हों। समापन एक गीत की निम्न पंक्तियों से उन्होंने किया–

हिन्दू भूमि का कण–कण हो अब शक्ति का अवतार उठे,
जल–थल से अम्बर से फिर हिन्दू की जय–जयकार उठे।
जग–जननी का जयकार उठे।।

---०---

उत्तर बाल प्रश्नोत्तरी – १.स, २. अ, ३. ब, ४. अ, ५. ब, ६. ब, ७.अ, ८. ब, ९. ब, १०. अ

पहचानो तो ये महापुरूष कौन हैं – लाचित बड़फूकन

आगामी पक्ष (१६ से ३० नवम्बर २०१७) के अवसर

(मार्गशीर्ष कृ.१३ से मार्गशीर्ष शु.११ तक)

जन्मदिवस

१९ नवम्बर(१८३५) – महारानी लक्ष्मीबाई की जयंती।

– संघ के प्रारंभिक प्रचारकों में से एक एवं विवेकानन्द स्मारक के निर्माता एकनाथ रानडे का जन्म दिवस (१९१४)

– उत्तर प्रदेश में संघ कार्य का बीजारोपण करने वाले भाऊराव देवरस का जन्म दिवस (१९१७)

मार्गशीर्ष शुक्ल ७ (इस बार २६ नव.) – भक्त शिरोमणि नरसी मेहता का जन्म दिवस।

मार्गशीर्ष शुक्ल ११ (इस बार ३० नव.) – गीता जयंती, १९ वें तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जी का जन्म दिवस।

पुण्यतिथि

२१ नवम्बर (१८९०) – महान् समाज सुधारक महात्मा ज्योतिबा फुले की पुण्यतिथि।

२७ नवम्बर (१९६७)– भारतीय क्रांतिकारियों को बम बनाना सिखाने वाले वीर सावरकर के साथी सेनापति पांडुरंग महादेव बापट का निधन।

शहादत

१६ नवम्बर (१९१५) – गदर पार्टी ने पूरे देश में २१ फर. १९१५ को एक साथ क्रांति की योजना बनाई थी। योजना का भेद खुलने पर अंग्रेजों की पकड़ में आये **विष्णु गणेश पिंगले तथा करतार सिंह सराबा सहित सात क्रांतिकारियों की शहादत।**

२१ नवम्बर (१९०८) – क्रांतिकारी साथियों का भेद खोलने वाले गद्दार नरेन्द्र गोस्वामी को मौत के घाट उतारने वाले **सत्येन्द्र नाथ बसु की शहादत।**

२२ नवम्बर (१९१५) – बंगाल के साहसी क्रांतिकारी मनोरंजन सेन गुप्त की शहादत।

महत्वपूर्ण घटना

१९ नवम्बर (१६६८) – छत्रपति शिवाजी महाराज ने कोंकण (गोवा) में सप्तकोटिश्वर मंदिर का जीर्णोद्धार कराया

विज्ञापन

बालक का अमर बलिदान

यह उन दिनों की घटना है जब चित्तौड़ में राजपूतों का शासन था और दिल्ली में मुगलों का। प्रताप **(यह बालक महाराणा उदयसिंह के पुत्र महाराणा प्रताप से भिन्न एक साधारण राजपूत बालक था)** नाम का एक बालक चित्तौड़ में रहता था। वह राजपूत था, किन्तु उसकी युद्ध–कला सीखने में कोई रुचि नहीं थी। उसकी रूचि थी संगीत में। वह सितार बजा–बजा कर वीरता के गीत गाया करता था। उसके गीत सुन कर लोगों की भुजाएं फड़कने लगती थीं।

एक बार तत्कालीन मुगल सम्राट ने चित्तौड़ पर चढ़ाई कर दी। बड़ा सुदृढ़ था चित्तौड़ का किला और बड़े शूरवीर थे चित्तौड़ के सैनिक। मुगल सैनिक किले की दीवार और फाटक नहीं तोड़ पाए और न वे किले के अंदर से वार कर रहे राजपूत सैनिकों के अस्त्र–शस्त्रों की मार का सामना कर पाए।

चित्तौड़ पर आये संकट को देखते हुये बालक प्रताप चित्तौड़ की छोटी–छोटी बस्तियों में जा–जा कर वीरता के गीत गाता और युवकों को सेना में भर्ती होने के लिए प्रोत्साहित करता था। उसके गीतों का बड़ा प्रभाव पड़ा और देखते ही देखते राजपूत सैनिकों की संख्या दुगुनी हो गई।

एक दिन बालक प्रताप किसी बस्ती में गीत गा रहा था। एक मुगल सैनिक ने उसका गीत सुना। वह उसे पकड़ कर अपने सेनापति के पास ले गया। सेनापति ने उससे पूछा–''तुम हम लोगों को भी गीत सुनाओगे?''

''हाँ–हाँ, क्यों नहीं।'' उस बालक ने उत्तर दिया।

सेनापति ने बालक को किले के फाटक के पास खड़ा कर दिया और आदेश दिया–'अब तुम गीत सुनाओ।'

सेनापति ने सोचा था कि उसके गीत सुन कर राजपूत सैनिक समझेंगे कि उस बालक को लेकर कोई दूसरी राजपूत सेना उनकी सहायता के लिए आई है और वे किले के फाटक खोले देंगे और हम सब धावा बोल देंगे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। बालक प्रताप गीत गाने लगा। गीत सुन कर राजपूत सैनिक सावधान हो गए और किले के अंदर से पत्थरों की बौछार करने लगे। मुगल सैनिकों में भगदड़ मच गई।

मुगल सेनापति गीतों की भाषा नहीं समझता था। उसने प्रताप से पूछा– ''लड़के ! सच–सच बता तुम क्या गीत गा रहे थे?''

प्रताप ने निर्भीकतापूर्वक उत्तर दिया–'' गा–गा कर मैं राजपूत सैनिकों को बता रहा था कि सावधान हो जाओ, शत्रु द्वार पर खड़ा है। शत्रुओं पर पत्थर मार–मार कर उनको पूरी तरह से नष्ट कर डालो।''

बालक का उत्तर सुनकर क्रोध से सेनापति की आंखें लाल हो गईं। उसने तुरंत तलवार से उस बालक का सिर धड़ से अलग कर दिया। मुगल सेना पत्थरों की मार से लहूलुहान होकर वापस लौट गई। ❑

पहचानो तो ये महापुरुष कौन हैं

बाल मित्रों! यहाँ हमारे एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं।

संकेत के आधार पर चित्र की पहचान करें और अपने ज्ञान की परीक्षा करें।

- इनका जन्म असम प्रांत में हुआ था।
- जिन्होंने मुगल सेना को ब्रह्मपुत्र में घेरकर मजा चखाया।
- राष्ट्र रक्षा में लापरवाही बरतने के कारण उन्होंने मामा का सर धड़ से अलग कर दिया था।
- असम के इतिहास और लोकगीतों में जो महाराज शिवाजी की तरह अमर हैं।

(उत्तर इसी अंक में है)

बाल–प्रश्नोत्तरी

१. त्रिशिर कौन था?
(अ) योगी (ब) मुनि (स) राक्षस (द) गंधर्व

२. पंचवटी में श्रीराम ने किस राक्षस को परास्त किया?
(अ) खर (ब) बाली (स) विराध (द) मय दानव

३. नासिक से कौन सा स्थान जुड़ा है?
(अ) नन्दीग्राम (ब) पंचवटी (स) दण्डक वन (द) ताड़क वन

४. भगवान श्रीराम ने अपने हाथों से किसका दाह कर्म किया?
(अ) जटायु (ब) कपटमृग (स) कामधेनु (द) गिलहरी

५. माता शबरी ने भगवान श्रीराम को अपने हाथों से क्या खिलाया?
(अ) मीठे आम (ब) झूठे बेर (स) मक्खन-मिश्री (द) पकवान

६. हनुमान जी ने भगवान श्रीराम की मित्रता किससे करायी?
(अ) बाली (ब) सुग्रीव (स) कबंध (द) अहिरावण

७. हनुमान जी की माँ का नाम क्या था?
(अ) अंजनी (ब) प्रियंवदा (स) अरुन्धती (द) अनुसुइया

८. श्रीराम ने सुग्रीव से किसकी साक्षी में मित्रता की?
(अ) जल (ब) अग्नि (स) सूर्य (द) चन्द्रमा

९. अंगद किसका पुत्र था?
(अ) सुग्रीव (ब) बाली (स) जामवंत (द) दुंदुभि

१०. माता सीता की खोज पर जाने से पहले हनुमान जी को किसने उनका बल याद दिलाया?
(अ) जामवन्त (ब) अंगद (स) नल (द) नील

(उत्तर इसी अंक में हैं)

अंक संदर्भ : १६ अगस्त,१ व १६ सित. २०१७

राष्ट्र का गौरव – वन्देमातरम्

१६ अगस्त के अंक में 'भारत का राष्ट्रगीत वन्देमातरम्' आमुख कथा पढ़ी। राष्ट्रगीत वन्देमातरम् का स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यह आत्म-बलिदान का संकल्प कराने वाला गीत है।

-हुकमचन्द चौधरी, *सपोटरा(करौली)*

राष्ट्रगीत वन्देमातरम् का जो लोग विरोध कर रहे हैं वे देशद्रोही से कम नहीं हैं। देश की एकता और अखण्डता के लिये वन्देमातरम् को अनिवार्य रूप से सभी कार्यालयों, शिक्षण संस्थाओं में प्रारम्भ किया जाना चाहिये।

-बेबी कंवर उदावत, *आगेवा (पाली)*

पचपन वर्ष की उम्र में मैंने प्रथम बार पूरा वन्देमातरम् १६ अगस्त के पाथेय कण में पढ़ा। पढ़कर मन प्रफुल्लित हुआ। अंक में 'ममता से बड़ा कर्तव्य' बोध कथा प्रेरक और ज्ञानवर्धक लगी।

-धरणीधर दाधीच, *रणसी(जोधपुर)*

साभार : दैनिक जागरण

मरुधरा के पीर

लोक संस्कृति के नायक एवं मरुधरा के पीर बाबा रामदेव पर दिया गया प्रसंग पढ़ा। राजस्थान के लोक देवताओं में बाबा रामदेव का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। बाबा रामदेव ने समाज में व्याप्त छुआछूत का पुरजोर विरोध कर सामाजिक सद्भाव का संदेश दिया। ऐसे लोकनायक को शत् शत् नमन।

-ईश्वरलाल धाकड़, *लक्ष्मीपुरा(बड़ी सादड़ी)*

स्वदेशी अपनाओ-देश बचाओ

अंक में स्वदेशी और विदेशी उत्पादों की सूची पढ़ी। वैसे तो अंक में सभी लेख पठनीय हैं लेकिन 'विदेशी वस्तुएं त्यागकर बोलो वंदेमातरम्' स्तम्भ ने विशेष प्रभावित किया। भविष्य में भी इस प्रकार की ज्ञानवर्धक जानकारियाँ अधिक से अधिक प्रकाशित करने का आग्रह है।

-हनुवन्त गिरी, *सुमेरपुर (पाली)*

स्वदेशी जागरण मंच द्वारा देश भर में चीनी सामान के विरोध में चलाया जा रहा अभियान श्रेष्ठ प्रयास है। चीनी सामान का बहिष्कार और स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देकर ही देश को आर्थिक दृष्टि से मजबूत बनाया जा सकता है।

-सोहनलाल पाठक, *सवाईमाधोपुर*

वीर सावरकर

अंक में चित्रकथा के रूप में दी जा रही वीर सावरकर की जीवन गाथा का कहना ही क्या। मेरा आपसे आग्रह है कि अंक में हर बार कुछ श्लोक गीता और कुछ रामायण की चौपाइयाँ भी शामिल करें। भगवान राम, कृष्ण, हनुमान, लक्ष्मण जैसे पात्रों पर बोध कथायें भी शामिल की जायें।

-राहुल मालाकार, *किशनगढ़ (अजमेर)*

जिहादियों का दुस्साहस

सरकारी स्कूल में बच्चों को नमाज पढ़ाना गैर कानूनी एवं जिहादियों की संकीर्ण मानसिकता को दर्शाता है। विद्यालय के अध्यापक संतलाल का साहसिक कदम हिन्दू समाज के लिए प्रेरणादायक है।

-श्यामलाल लखेरा, *बावड़ी (जोधपुर)*

गणपति के विग्रह

१ सित. के अंक में प्रथम पूज्य गणेश जी के विभिन्न देशों में प्राप्त विग्रह तथा उन पर प्रकाशित डाक टिकटों के चित्र बड़े ही मन भावन लगे। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृति का परचम सम्पूर्ण विश्व में रहा है।

-रामवतार मित्तल, *सवाईमाधोपुर*

चित्रमय प्रश्नोत्तरी

अंक में 'पहचानो तो ये महापुरुष कौन हैं' चित्रमय प्रश्नोत्तरी अच्छी लगी। संक्षेप में महापुरूषों के विषय में जानकारी देने का यह सबसे अच्छा माध्यम है। भावी पीढ़ी को यह जानकारी होनी ही चाहिये।

-राकेश चौहान, *पीलवा (नागौर)*

देशविभाजन का दुष्चक्र

धारा ३५ ए के बारे में ऐतिहासिक जानकारी पढ़ने को मिली। राष्ट्रविरोधियों की कूटनीतियों का ज्ञान भी इस लेख से हुआ। देश के नागरिकों में राष्ट्रीयता के स्थान पर अलगाववाद उत्पन्न करने वाली ऐसी धाराओं का पुरजोर विरोध होना चाहिये तथा सरकार को भी चाहिये कि देश-तोड़क ऐसी धाराओं में जल्द से जल्द सुधार करें।

-विकास जांगीड़, *विराटनगर,जयपुर*

ज्ञानवर्द्धक प्रश्नोत्तरी

पाथेय कण में प्रकाशित दोनों प्रश्नोत्तरियां ज्ञानवर्धक और रुचिकर हैं। हमारे यहाँ गणेश चतुर्थी के अवसर पर प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में पाथेय में प्रकाशित प्रश्नों को ही पूछा जाता है। इस कार्यक्रम से लोगों में पाथेय पढ़ने की रुचि और ज्ञान में भी निरंतर वृद्धि हो रही है।

-मनोज झा, *आदर्श नगर (अजमेर)*

राष्ट्रभक्त श्यामजी वर्मा

अंक में क्रांतिकारियों के पितामह श्यामजी कृष्ण वर्मा पर दिया गया प्रसंग पढ़ा। राष्ट्रभक्तों पर ऐसी जानकारी कम ही पढ़ने को मिलती है।

-पवन जोशी, *सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर)*

प्राचीन भारत के विज्ञान पर लंदन में प्रदर्शनी लगी

हम भारतीयों के मन में ऐसी 'हीनता' की भावना बैठी हुई है कि अपनी श्रेष्ठ विरासत का हम मजाक उड़ाते हैं और पश्चिम की जूठन खा कर सीना फुला देते हैं। पश्चिमी जगत आदि हमारी किसी उपलब्धि की प्रशंसा कर दे तो हम भी उसके पीछे दौड़ने लगते हैं। विज्ञान के क्षेत्र में भी प्राचीन भारत प्रगति के चरम पर था, यह एक सच्चाई है। लेकिन लिबरल–सेकुलर–नक्सल गठजोड़ कतई यह मानने को तैयार नहीं है और इस सच्चाई का उपहास करता दिखाई देता है।

लेकिन अक्तूबर माह में लंदन में प्राचीन भारत के विज्ञान पर एक शानदार प्रदर्शनी लगाई गई। लंदन के साइंस म्यूजियम ने यह प्रदर्शनी आयोजित की थी तथा इसका नाम था – **प्रकाशमान भारत : पाँच हजार वर्षों की विज्ञान और आविष्कारों की परम्परा** अंग्रेजी दैनिक डी एन ए के अनुसार गत ४ अक्तूबर को इस प्रदर्शनी का शुभारम्भ हुआ। शुभारम्भ के अवसर पर प्रदर्शनी प्रमुख श्री गेट किम्बरली ने कहा कि विज्ञान, तकनीकी, अभियांत्रिकी तथा गणित के क्षेत्र में भारत के योगदान की उपेक्षा नहीं की जा सकती। उन्होंने बताया कि चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में भी भारत का महत्वपूर्ण योगदान था तथा त्रिकोणमिति तो भारत की ही देन है। इसी के आधार पर भारत के खगोल विज्ञानियों ने पृथ्वी की ठीक–ठीक आकृति का पता लगाया था। सिविल इंजीनियरिंग में भी भारत की भूमिका विलक्षण थी।

देश का पहला गो–अभयारण्य मध्यप्रदेश में बना

वन्य–जीवों के लिये तो देश में कई अभयारण्य हैं पर गायों के लिये भी भारत का पहला अभयारण्य बना है और यह मध्यप्रदेश में हैं। गोवंश के संरक्षण, भारतीय नस्ल की गायों के संवर्द्धन और पंचगव्य के उत्पादों को प्रोत्साहन देने के लिये राज्य के आगर–मालवा जिले के सालरिया गाँव में यह बना है। लगभग १२०० एकड़ भूमि में बने इस केन्द्र का शुभारम्भ कुछ दिनों पूर्व हुआ है। २४ दिसम्बर २०१२ को सरसंघचालक भागवत जी ने इसके लिये भूमि पूजन किया था। इसमें छह हजार गायें रखी जा सकेंगी।

भारतीय गायों की कई नस्लें लगभग समाप्त होने की ओर हैं। ऐसी सब नस्लों को इस अभयारण्य में सुरक्षा दे कर उनका संवर्द्धन किया जायेगा। इसके अतिरिक्त बीमार, वृद्ध व अशक्त गायों को भी सुरक्षा दी जायेगी। गायों के दूध, घी, दही, गोमय एवं गोमूत्र से औषधियाँ एवं दैनिक उपयोग की वस्तुएं भी यहाँ तैयार की जायेंगी। गोबर से बायोगैस, जैविक खाद तथा गोमूत्र से कीटनाशक भी इस अभयारण्य में तैयार किये जायेंगे।

प्रधानमंत्री का चित्र बनाया तो जिहादियों ने धुन दिया

बलिया की श्रीमती नगमा प्रवीण को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा उ.प्र. के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का चित्र (पेंटिंग) बनाना संकट को बुलावा देना हो गया। नगमा बड़ी अच्छी चित्रकार हैं और पिछले दिनों उन्होंने देश के प्रधानमंत्री और प्रदेश के मुख्यमंत्री के सुन्दर चित्र बनाये। उनके शौहर परवेज खान दोंनों चित्र देख कर आग– बबूला हो गये। उन्होंने अपने छह दोस्तों के साथ पहले तो नगमा की जम कर पिटाई की और फिर घर से निकाल दिया। दैनिक भास्कर के अनुसार नगमा के पिता ने सिकंदरपुर थाने में पूरे मामले की प्राथमिकी दर्ज कराई है। क्या यह अभिव्यक्ति की आजादी पर हमला नहीं है, असहिष्णुता नहीं है? सेकुलर गठजोड़ के कलम घसीटों से यह प्रश्न किया जाना चाहिये।

वी.राजगोपाल को आदर्श वेदाध्यापक पुरस्कार

चेन्नई के वी राजगोपाल घनपाठी को वेदों का ज्ञान प्रसारित करने के लिये 'आदर्श वेदाध्यापक' का पुरस्कार दिया गया । पुरस्कार स्वरूप उन्हें पाँच लाख रू. की राशि दी गई। विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष रहे स्व. अशोक जी सिंहल की स्मृति में बने 'सिंहल फाउण्डेशन' की ओर से यह पुरस्कार दिया गया। बीड़ (महाराष्ट्र) के सागर शर्मा को 'उत्कृष्ट वैदिक छात्र' तथा परभणी (महाराष्ट्र) के वेद विद्यालय को सर्वश्रेष्ठ वेद विद्यालय का पुरस्कार प्रदान हुआ। इन्हें क्रमशः तीन व सात लाख रू. सम्मान स्वरूप दिये गये।

सरसंघचालक भागवत जी ने गत ५ अक्तू. को नई दिल्ली में उक्त पुरस्कार दिये। समारोह में उन्होंने कहा कि विज्ञान और अध्यात्म का संगम होना चाहिये। उ.प्र. के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने अशोक जी सिंहल के नाम पर एक शोध संस्थान खोलने की घोषणा की।

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में दुर्गा–पूजा करते जम्मू–कश्मीर के उप मुख्यमंत्री निर्मल सिंह। महिषासुरों के गढ़ में माँ दुर्गा की पूरे नौ दिनों तक चली आराधना देशवासियों के लिए सुखद आश्चर्य था।

चर्च ने केन्द्र सरकार को धमकाया

झारखण्ड के मुख्यमंत्री को हटाओ या परिणाम भुगतो

झारखण्ड में रा.ज.ग. की सरकार है तथा मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास है। इस 'फ्रीडम ऑफ रिलीजन बिल २०१७' के अनुसार धमकी, दबाव या लालच से किसी का रिलीजन (पंथ) बदलने पर रोक लगाई गई है। इसी बात से ईसाई पादरी गुस्से में हैं। इसके विरोध में सितम्बर व अक्तू. माह में पादरियों तथा मिशन स्कूल के छात्रों ने प्रदर्शन भी किये हैं।

अब **कैथोलिक बिशप्स कान्फ्रें स ऑफ इण्डिया** के महासचिव ने प्रधानमंत्री को पत्र लिखा है, कि झारखण्ड के मुख्यमंत्री समाज में घृणा फैला रहे हैं और उन्हें तुरंत हटाया जाये। महासचिव मस्करेन्हास ने पत्र में मुख्यमंत्री को बनाये रखने पर गम्भीर परिणाम निकलने की चेतावनी भी दी है।

स्विट्जरलैण्ड के हैं और हिमालय में वेद पढ़ा रहे हैं

उत्तरकाशी (उत्तराखण्ड) से १५ कि.मी. की दूरी पर गजौली गाँव हैं। यहाँ एक वेद विद्यालय है। वहाँ से गुजरने वालों के कानों में जब वैदिक ऋचाओं का गायन सुनाई पड़ता है तो वे मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। वेद विद्यालय को देख कर किसी प्राचीन गुरुकुल की याद आ जाती है। इससे भी अधिक आश्चर्यचकित करने वाली बात यह है कि स्विट्जरलैण्ड के निवासी श्री उष्ट स्ट्रॉबल यहाँ वेद और वेदांगों की शिक्षा देते हैं।

७२ वर्ष के उष्ट स्ट्रॉबल वर्ष १९७५ में महर्षि योगी से स्विट्जरलैण्ड में आयोजित एक शिविर में मिले थे। शिविर में रहने के बाद भारतीय संस्कृति को जानने की प्रबल इच्छा उनके मन में उठी। उस समय तीस साल के स्ट्रॉबल केमिकल इंजीनियर थे। महर्षि से ही उन्होंने वेद, पुराण,उपनिषद और गीता का ज्ञान प्राप्त किया। आजीवन विवाह न करने का संकल्प ले वे अपने देश में भारतीय संस्कृति का प्रचार करने लगे। १९९७ में वे भारत आ गये और सीधे कौसानी (कुमाऊँ–उत्तराखण्ड) पहुँचे। अपना नाम भी उन्होंने आशुतोष रख लिया। कौसाली में उन्होंने एक वेद–विद्यालय प्रारम्भ किया। वह चल निकला तो उन्होंने गजौली में दूसरी वेद–पाठशाला प्रारम्भ की।

दोनों विद्यालयों में निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। इनका खर्च आशुतोष महाराज की स्विट्जरलैण्ड स्थित पैतृक सम्पत्ति से चलता है।

श्रीराम की आरती की तो फतवा मिल गया

देवबन्द के कट्टरपंथी संस्थान दारूल उलूम ने गत २१ अक्तूबर को फतवा दिया है कि जो अल्लाह के अतिरिक्त किसी दूसरे भगवान की पूजा करता है वह मुसलमान नहीं है। काशी (वाराणसी) में दिवाली के दिन कुछ मुस्लिम बहिनों ने श्रीराम की आरती की थी। उसी से कुपित होकर दारूल के मुफ्ती मोहम्मद अरशद फारूखी ने उक्त फतवा दिया। फतवा देते हुए मुफ्ती ने कहा कि, ''जो मुस्लिम किसी अन्य भगवान को पूजता है वह मुसलमान नहीं है।''

फतवे पर प्रतिक्रिया देते हुए नाजनीन अंसारी ने कहा–''श्रीराम हमारे पुरखे हैं। हम अपना नाम या मज़हब बदल सकते हैं पर हम अपने पुरखों को कैसे बदल सकते हैं?'' नाजनीन अंसारी 'मुस्लिम महिला फाउण्डेशन' की अध्यक्ष हैं तथा उन्होंने ही श्रीराम की पूजा करने की अगुवाई की थी। मुफ्ती फारूखी के संकुचित विचारों के विपरीत हिन्दू समाज में श्रीराम की पूजा करने वाला भी हिन्दू है तथा श्रीकृष्ण की उपासना करने वाला भी है। शिवजी को मानने वाला भी है और देवी दुर्गा को मानने वाला भी हिन्दू है। गणेश जी की पूजा करने वाला भी हिन्दू है और भगवान कार्तिकेय (मुरुगन) की पूजा करने वाला भी है। अकाल पुरुष, महावीर बुद्ध और किसी को भी भगवान न मानने वाला भी हिन्दू ही रहता है। अब तय करें कि असहिष्णु कौन हैं?

रोहिंग्याओं के आधार–कार्ड बने

हैदराबाद में दीपावली से पहले पुलिस ने एक रोहिंग्या घुसपैठिये को पकड़ा जिसने धोखा–धड़ी कर आधार कार्ड बना लिया था। मोहम्मद अजमुद्दीन नाम के इस रोहिंग्या का आधार–कार्ड एक स्थानीय जिहादी ने बनवाया। सूत्रों के अनुसार ओवेसी की पार्टी से कथित रूप से जुड़े रियादुद्दीन मौला ने उक्त रोहिंग्या को बेटा बता कर उसका आधार बनवाया। इस नकली पिता को भी पुलिस ने बन्दी बना लिया है।

जो मानवतावादी–उदारवादी सेकुलर लोग रोहिंग्याओं को भारत में रहने देने की अपीलें कर रहे हैं, उन्हें इस उदाहरण से कुछ चिन्तन करना चाहिये। भारत के जिहादी गिरोह इन रोहिंग्याओं के राशन–कार्ड , मतदाता पहचान–पत्र और फिर आधार कार्ड बनवा कर ठाठ से भारत के नागरिक हो जायेंगे और सारे अधिकारों की माँग करते हुए उपद्रव करेंगे। भारत पर आर्थिक बोझ ये घुसपैठिये अभी से बन रहे हैं तथा तस्करी आदि में लिप्त हो गये हैं।

आस्ट्रिया में भी बुर्के पर प्रतिबन्ध

पूर्वी यूरोप के देश आस्ट्रिया में भी गत १ अक्तूबर से बुर्के तथा इसी प्रकार के इस्लामी पहचान वाले पहनावे पर रोक लगा दी गई है। सार्वजनिक स्थानों पर ऐसे वस्त्रों में आस्ट्रिया में अब कोई नहीं घूम सकेगा। इस प्रकार कई यूरोपीय देशों में अब बुर्के पर रोक लगा दी गई है। ये प्रतिबंध आस्ट्रिया आने वाले पर्यटकों पर भी लागू होंगे।

उधर आस्ट्रेलिया में गत दिनों वहाँ रह रहे कुछ मौलवियों ने इस्लामी कानून 'शरिया' लागू करने की माँग की। इस पर वहाँ की सरकार ने कहा कि जिसे आस्ट्रेलिया में शरिया चाहिये, वह किसी इस्लामी देश में चला जाये।

सुन्दरवन में घुसपैठियों का आतंक

दक्षिण चौबीस परगना बंगाल का एक जिला है जो पूर्व दिशा में बांग्ला देश से सटा हुआ है। राज्य में सरकार भी घोर तुष्टीकरण करने वाली है। परिणामस्वरूप घुसपैठियों की बन आई है और पूरे जिले में बांग्लादेशी घुसपैठियों ने दबदबा बना लिया है। जिले में रहने वाले हिन्दुओं पर घोर अत्याचार हो रहे हैं। अत्याचारों की पूरी कहानी पिछले दिनों शांतिराम मुण्डा ने सुनाई जो पिछड़े (दलित) वर्ग के हैं और घुसपैठियों की हिंसा से त्रस्त हो अपना घर-बार छोड़ कर परिवार सहित दिल्ली में भटक रहे हैं।

पाक्षिक 'यथावत' के अनुसार उक्त जिले में दस साल पहले पिछड़े वर्ग के सौ परिवार रहते थे। अनेक परिवारों के पलायन कर जाने के कारण अब केवल ४५ परिवार बचे हैं जो आतंक के साये में रह रहे हैं। शांतिराम मुण्डा ने बताया कि उनकी १४ वर्ष की भतीजी २०१३ में दुर्गा पूजा के पाण्डाल से लौट रही थी। मार्ग में शाहजहाँ, रफीक, शमशुद्दीन और ओसादुल ने उसका अपहरण कर उसका शील भंग किया। पीड़ित परिवार जब पुलिस थाने गया तो पहले तो उनको भगा दिया गया। बाद में अन्य धाराओं में रिपोर्ट लिखी गई। चार सालों में कोई आरोपी गिरफ्तार नहीं हुआ है। इसके विपरीत बांग्लादेशी गुण्डों ने पीड़िता के पिता की दुकान बन्द करा दी। उपद्रवी खेतों में फसल नहीं बोने दे रहे। लाचार हो कर पूरा परिवार अनुसूचित जाति-जनजाति आयोग में गुहार लगाने दिल्ली आया है।

बताया जाता है कि उक्त अपराधी लड़कियों की तस्करी में भी लिप्त है।

माता-पिता की उपेक्षा करो और वेतन कटाओ

असम विधानसभा ने पिछले दिनों एक विधेयक पारित किया जिसमें माता-पिता की उपेक्षा करने वाले सरकारी कर्मचारियों का वेतन काटने का कानून बनाया गया है। इस विधेयक के अनुसार जो राज्य-कर्मी अपने माता-पिता और दिव्यांग भाई-बहिनों की ठीक से देखभाल नहीं करेंगे उनके वेतन से हर महीने दसवाँ हिस्सा काट कर माता-पिता को दिया जायेगा। दिव्यांग भाई-बहिनों को भी सहायता देने का प्रावधान रखा गया है।

इस प्रकार का देश में बनने वाला यह पहला कानून है। इसी के साथ राज्य सरकार ने यह भी तय किया है कि वैध आयु (पुरुष २१ वर्ष तथा कन्या १८ वर्ष) से कम आयु में विवाह करने वालों को राज्य सरकार की नौकरी नहीं मिलेगी। दो से अधिक सन्तान वालों को भी सरकारी नौकरियों से वंचित रहना पड़ेगा।

माता-पिता की उपेक्षा पर आर्थिक दण्ड का कानून बनाना सराहनीय है, किन्तु माता-पिता, दिव्यांग भाई-बहिनों आदि की सेवा का सम्बन्ध संस्कारों से है। कानून बनाने के साथ-साथ संस्कार प्रदान करने की मजबूत व्यवस्था बनानी भी जरूरी है।

चर्च केन्द्रीय मंत्री एल्फोंस को ईसाई नहीं मानता

कुछ समय पूर्व केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में फेर-बदल हुआ और कुछ नये महानुभाव केन्द्र सरकार में मंत्री बने थे। उनमें केरल के श्री कन्नन्थनम एल्फोंस भी थे। जिन्हें पर्यटन विभाग में राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) बनाया गया था। उनके मंत्री बनते ही भारत के चर्च ने उनके ईसाई होने पर ही प्रश्न चिन्ह लगा दिया। सीरियन कैथोलिक चर्च के प्रवक्ता पादरी पॉल थेलाकत ने एक लेख में लिखा है कि, *''एल्फोंस को अब ईसाई नहीं माना जा सकता क्योंकि वे हिन्दुत्ववादी सरकार में शामिल हो गये हैं।''*

यह लेख केरल के समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ है। सहिष्णुता का ढोंग करने वाले लोग खुद कितने कट्टरपंथी हैं यह उक्त लेख से स्पष्ट हो जाता है।

इससे यह भी पता चलता है कि कैथोलिक पादरी हिन्दुत्व के कैसे घोर विरोधी हैं और इस वैश्विक विचार को सहन करने को भी तैयार नहीं है।

इंगलैण्ड की प्रधानमंत्री ने कहा

दीपावली हिन्दू संस्कृति की श्रेष्ठता का प्रतीक है

दीपोत्सव पर अपनी शुभकामनायें देते हुए इंगलैण्ड की प्रधानमंत्री श्रीमती टेरेसा ने कहा कि दीवाली हिन्दू संस्कृति को अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में प्रदर्शित करता है। अपने संदेश में उन्होंने कहा कि दीवाली मात्र हिन्दू समाज के लिये ही महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि पूरी दुनिया के लिये प्रासंगिक इसलिये है कि यह अंधकार से प्रकाश की ओर जाने के लिये प्रेरित करता है। प्रधानमंत्री टेरेसा मे ने कहा कि श्रीराम के असुरों का संहार कर अयोध्या लौटने पर पाँच दिनों का यह पर्व मनाया जाता है। श्रीराम का जीवन हमें सुदृढ़ परिवार तथा समाज बनाने की प्रेरणा देता है। साथ ही यह बुराई को छोड़ कर सही जीवन-मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देता है। श्रीराम का जीवन हमें सेवा, एकता, सहिष्णुता तथा कर्तव्य-परायणता की सीख देता है। इन गुणों की आज पहले से अधिक जरूरत है क्योंकि हमें एक सामंजस्य युक्त दुनिया की रचना करनी है।

श्रीमती टेरेसा ने दीवाली का महत्व स्पष्ट करते हुए आगे कहा कि दीवाली उल्लास के साथ जिन्दगी जीने की प्रेरणा देता है। ब्रिटेन के विकास में हिन्दू समाज के योगदान की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दू समुदाय ने ब्रिटेन और यूरोप के जनजीवन में एक अहम योगदान दिया है।

अब उईघरों के चाकू रखने पर भी रोक लगी

चीन के पश्चिमी प्रांत जिन-जियांग में लगभग एक करोड़ उईघर मुसलमान रहते हैं। म्यांमार के रोहिंग्याओं की तरह उईघर भी चीन में उपद्रव कर रहे हैं किन्तु चीनी सरकार कठोरता से हिंसा का दमन कर रही है। बुर्के पर तो वहाँ पहले से ही रोक है कुछ समय पहले चीनी सरकार ने हुसैन, अहमद आदि मुस्लिम नाम रखे जाने पर रोक लगा दी। मुस्लिम नाम रखने वालों को किसी भी प्रकार की सरकारी सुविधा, नौकरी आदि न दिये जाने का आदेश चीन की सरकार ने निकाला।

उसके बाद दाढ़ी रखने तथा मर्दों के मुस्लिम वेश पहनने पर रोक लगाई गई।

इसके बाद आदेश आया कि उईघरों के घर, मदरसों, मस्जिदों में जितनी भी कुरान की प्रतियाँ हैं, सब सरकार के पास जमा करा दी जायें। अंग्रेजी दैनिक डीएनए (१३अक्तू.) के अनुसार इंटरनेट के प्रयोग पर भी प्रतिबंध लगाये गये हैं। और अब नये चीनी सरकारी आदेश के अनुसार उईघरों को घर या अन्यत्र काम आने वाले चाकुओं का भी पंजीकरण कराना होगा। सरकार प्रत्येक चाकू पर पहचान का निशान लगायेगी। वही चाकू घरों में काम लिये जा सकेंगे।

आश्चर्य की बात है कि इन अमानवीय प्रतिबंधों के विरोध में कोई नहीं बोल रहा। न तो भारत का लिबरल-सेकुलर-नक्सल गठजोड़ कुछ बोल रहा है और न ही संयुक्त राष्ट्र संघ कोई ची-चपड़ कर रहा है। भारत और अन्य देशों में उदारवादी चिन्तक भी कोई प्रेरक टिप्पणियाँ समाचार-पत्रों में लिख रहे हैं। और बेचारे म्यांमार के पीछे आधी दुनिया पड़ी है। भारत में भी रोहिंग्याओं के पक्ष में लच्छेदार लेख और तर्क प्रस्तुत किये जा रहे हैं। सच है, समरथ को नहीं दोष गुसाईं और कमजोर हर जगह पिटता है।

ऑक्सफोर्ड ने आंग सान सू की का सम्मान वापस लिया

भारत में अवार्ड-वापसी गिरोह सक्रिय है। हाल ही में एक दक्षिण भारतीय अभिनेता ने अपने सारे सम्मान वापस लौटाने की धमकी दी है। ये श्रीमान् फिल्म 'सिंहम्' में खलनायक थे। लोक-सभा चुनाव जैसे-जैसे समीप आयेगा वैसे ही यह अवार्ड-वापसी जमात फिर तलवारें भांजेगी। अपने देश में ये लोग सम्मान लौटाते है और इंग्लैण्ड के आक्सफोर्ड नगर ने खुद ही सम्मान वापस ले लिया। वर्ष १९९७ में म्यांमार की प्रसिद्ध नेत्री आंग सान सू की को वि.वि. के लिये विश्व प्रसिद्ध इस नगर ने 'फ्रीडम ऑफ आक्सफोर्ड' सम्मान दिया था। अक्तूबर के प्रारम्भ में यह सम्मान वापस ले लिया गया।

क्यों वापस लिया गया उक्त सम्मान? इसलिये कि आंग सू की ने रोहिंग्या मुसलमानों का बचाव नहीं किया। म्यांमार सरकार की वास्तविक मुखिया आंग सू की ने स्पष्ट रूप से कहा कि रोहिंग्या आतंकी कार्रवाइयों में लिप्त हैं इसलिये दुनिया का लिबरल-सेकुलर-नक्सल गठजोड़ उनसे कुपित है। ज्ञात हो कि श्रीमती सू की को शांति के लिये १९९१ का नोबेल पुरस्कार भी मिल चुका है। कई घोर उदारवादी वह पुरस्कार भी वापस लेने पर जोर दे रहे हैं।

इन महान् उदारवादियों को पता होना चाहिये कि अपने राष्ट्र की सुरक्षा सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं जरूरी है। उसके सामने इन टुच्चे पुरस्कारों का कोई मोल नहीं है।

कामरेडों की हिंसा थम नहीं रही है केरल में

कहावत है कि कुत्ते की पूंछ बारह सालों तक सीधी नली में रखने के बाद भी टेढ़ी ही निकलती है। केरल के कामरेडों की भी यही स्थिति है। गत १५ अक्तूबर को फिर मार्क्सवादी कार्यकर्ताओं ने एक स्वयंसेवक पर हमला किया। कन्नूर जिले के इडाक्कड़ में निधीश पर लाल गिरोह ने हमला किया। निधीश की जान तो बच गई पर कुछ महीने उसे अस्पताल में बिताने होंगे। इसके पहले तेल्लीचेरी में १० अक्तूबर को संघ कार्यकर्ता सुरेश को ऑटो रिक्शा से खींच कर लोहे के छड़ों से धुना गया। सुरेश भी तेल्लीचेरी के अस्पताल में भर्ती है।

सेकुलरवादी समाचार पत्र और चैनल अभी भी इन घटनाओं पर मौन साधे हुए हैं। गाँधी जी के तीन बन्दरों से प्रेरणा लेकर उन्होंने आँख-कान और मुँह भी बन्द कर रखा है। निधीश, सुरेश के स्थान पर यदि कोई किसी अन्य मज़हब का होता तो अब तक आकाश गिरने वाला होता।

अब लद्दाख भी लव-जिहाद की चपेट में आया

जम्मू-कश्मीर राज्य का लद्दाख नगाधिराज हिमालय का क्षेत्र है तथा वहाँ अधिकांश जनसंख्या बौद्धमत मानने वालों की है। लेकिन अब जिहादियों ने सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण इस क्षेत्र में भी पैर पसार लिये हैं। जून माह में सिन्धु दर्शन यात्रा पर गये जयपुर के एक महानुभाव ने बताया कि लेह तक के मार्ग में सारे दुकानदार, पर्यटक गाइड, कुली आदि जिहादी ही हैं। जनसंख्या बढ़ाने का सबसे प्रभावी नुस्खा लव-जिहाद है। जिहादी नौजवान अब बौद्ध कन्याओं को प्रेम-जाल में फँसा रहे हैं। इसी के साथ उन्हें मुसलमान बना कर उनसे निकाह कर रहे हैं।

गत माह 'लद्दाख बुद्धिस्ट एसोसिएशन' ने प्रधानमंत्री से मिल कर लद्दाख नें बढ़ रहे जिहादी खतरे के बारे में बताया। एसोसिएशन के उपाध्यक्ष ने पत्रकारों को बताया कि द्रास (कारगिल) में मुर्तजा आगा ने एक बौद्ध कन्या तेनजिन साल्दोन को अगवा कर उसे मुसलमान बना कर उसका नाम शिफा रख दिया और फिर उससे विवाह कर लिया। उपाध्यक्ष श्री पी.टी. कुंजांग के अनुसार राज्य प्रशासन ने रपट लिखाने के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं की। कुजांग ने यह भी बताया कि गत वर्षों में ९० बौद्ध कन्याओं को भगा कर उन्हें मुसलमान बनाया गया है।